International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.3 Jan – Feb 2023

आधुनिक भारत में सामाजिक आन्दोलन

स्वेता चौधरी
शोधार्थी- चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
Corresponding Author- **स्वेता चौधरी**
DOI- 10.5281/zenodo.7583234

सारांश
आन्दोलन समाज के विकसित होने की प्रक्रिया में जन्म लेते हैं अपने युग की समस्याओं को समझने और समस्याओं को सुलझाने का सामूहिक प्रयत्न करते हैं और अन्ततः अपना दाथ इतिहास को देकर समाप्त हो जाते हैं तब तक के लिए जब तक कोई दूसरा आन्दोलन जन्म न लें। आधुनिक भारत में समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिए समयसमय पर - आधुनिक भारत में सामाजिक आन्दोलनों का आगाज हुआ है। आन्दोलन सामाजिक बुराईयों को दूर करने का काम करते हैं अनेकों विचारकों ने सामाजिक आन्दोलनों में बढ़बढ़ कर हिस्सा लिया है और अपने विचार भी दिये हैं।-

शब्द कुंजी : ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, यंग बंग आन्दोलन, शिक्षा अन्तर्जातीय विवाह, आर्य समाज, नर्मदा आन्दोलन शुद्धि, आन्दोलन भाषा का समर्थन विधवा विवाह।

आधुनिक भारत में सामाजिक आन्दोलन

ब्रह्म समाजसामाजिक कुरीतियों का धर्म से कोई सम्बन्ध - न मानते हुए राजा राममोहन राय ने अनेक कुरीतियों का प्रथा -विवाह जाति-प्रथा बाल-विरोध किया। सती छुआछूत, कन्या विक्रय और कब्जाकुरीतियों वध आदि- को समाप्त करने के लिए ब्रह्म समाज आन्दोलन किया तथा स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। राजा राम मोहन राय की मृत्यु के पश्चात् देवेन्द्र नाथ टैगोर और केशव चन्द्र सेन ने ब्रह्म समाज का नेतृत्व किया। ब्रह्म समाज की स्थापना को हम आधुनिक काल का धार्मिक और सामाजिक का आरम्भ मान सकते हैं। राजा राम मोहन राय ने हिन्दू धर्म व समाज की कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया।

यंग बंगाल आन्दोलन -19वीं शताब्दी के तीसरे व चैथे दशक में बंगाल के बुद्धिजीवियों ने एक आन्दोलन आरम्भ किया जाने यंग बंगाल के नाम से जाना जाता है इसके प्रेरणा स्त्रोत हेनरी विवियन डिरोजियों थे। इन्हें भारत से अपार प्रेम था उन्होंने अपने विद्यार्थियों को विवेकपूर्ण और मुक्त ढंग से सोचने सभी आधारों की प्रामणिकता की जाँच करने मुक्ति समानता और स्वतंत्रता से प्रेम करने तथा सत्य की पूजा करने की सलाह दी। सन् 1834 ई0 बम्बई में स्थापित एलफिनस्टन कॉलेज ने यंग बंगाल का अनुकरण करके यंग बंगाल नामक संस्था खोली। प्रार्थना समाजकेशन चन्द्र सेल के नेतृत्व में ब्रह्म समाज का प्रचार - देश के विभिन्न भागों में हुआ। सन्1964 ई0 उन्होंने बम्बई की यात्रा की। उसकी प्रेरणा सन् 1867 ई0 में आत्माराम पाण्डूरवा ने बम्बई में ब्रह्म समाज के आधार पर प्रार्थना समाज की स्थापना की।

आर्य समाज सन्-1824 ई0 में गुजरात के एक गाँव के ब्राह्मण परिवार में मूल शंकर का जन्म हुआ। चैदह वर्ष की आयु में वे घर छोड़कर चले गये। उसके बाद पन्द्रह वर्ष तक उन्होंने देश के विभिन्न भागों का भ्रमण किया आरम्भ में उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन किया किन्तु कुछ समय के बाद वे साधु बन गये। सन् 1860 ई0 में उन्होंने मथुरा में स्वामी वृजानन्द से दीक्षा ली। उनके पास रहकर दयानन्द ने संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करके वेदों का गहन अध्ययन किया।

आर्य समाज का सुधार आन्दोलन में योगदान
शिक्षाशिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान - के कुछ शिष्यों ने हरिद्वार व अन्य सराहनीय है दयानन्द स्थानों गुरूकलों की स्थापना की। इनका संचालन प्राचीन आश्रमों की परम्परा के अनुसार किया गया। इस दल के नेता मुंशी राय थे। शुद्धि आन्दोलनइस्लाम व ईसाई - धर्म के प्रचार के फलस्वरूप हिन्दूओं द्वारा धर्म परिवर्तन दयानन्द ने शाह आन्दोलन चलाया। को कम करने के लिए कम करने के लिए दयानन्द ने शुद्धि आन्दोलन चलाया। ऐसे हिन्दूओं का जो ईसाई अथवा मुस्लिम धर्म स्वीकार कर चुके थे तथा वापिस हिन्दू धर्म की शरण में आना चाहते थे आर्य समाज ने स्वागत किया, वस्तुतः आर्य समाज ने शुद्धि आन्दोलन को भारत की धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक एकता के लिए एक आवश्यक कार्यक्रम माना। इस आन्दोलन के कारण आर्य समाज को सैनिक हिन्दूत्व संस्था बताया गया है। हिन्दी भाषा के प्रयोग का समर्थनदयानन्द हिन्दी भाषा के समर्थक थे। - न्दी हिन्दी के राष्ट्रभाषा स्वीकार भाषा के समर्थक थे। हि

के राष्ट्र भाषा स्वीकार करने वाले वे प्रथम महान थे। उन्होंने अपने सब ग्रन्थ में हिन्दी में लिखे। हिन्दी भाषा और साहित्य को प्रोत्साहित करकेआर्य समाज अंग्रेजी भाषा पर निर्भरता कम करने का प्रयत्न किया। राष्ट्रीयता पर बालन राय के यद्यपि दयानन्द ने राजा राम मोह- समान राजनीतिक अधिकारों की माँग नहीं की किन्तु उनके विचारों से राष्ट्रीय और स्वराज्य की भावना की बल मिला सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार अच्छे सेे अच्छा विदेशी राज्य स्वदेशी राज्य की तुलना नहीं कर सकता। दयानन्द ने विदेशी राज्य की तुलना नही कर सकता। दयानन्द ने उपयोग करने की सलाह दी। भारत के प्राचीन गौरव का स्मरण कराके दयानन्द ने आत्म सम्मान और स्वालम्बन की भावना जागृत की। आर्य समाज ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में सराहनीय योगदान दिया।

जाति बंधन व अस्पृश्यता का विरोधराजा राम मोहन - श्वास करते थे कि राय के समान स्वामी दयानन्द भी वि पौराणिक युग में हिन्दू समाज में अनेक कुरीतियाँ प्रचलित हो गयी थी। जिन्हें दूर किये बिना समाज प्रगति नहीं कर सकता। स्वामी दयानन्दने जाति के बंधन को नहीं माना तथा अस्पृश्यता का विरोध किया।

अन्तर्जातीय विवाह तथा विधवा विवाह का समर्थन- ने अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन किया लड़के व उन्हों लड़की का विवाह क्रमशः18 व 16 वर्ष की आयु में करने का समर्थन किया। आम तौर पर वह विधवा विवाह को पसन्द नहीं करते थे किन्तु एक सन्तानहीन विधवा के विवाह पर उन्हें आपत्ति नहीं थी। थियोसोफिकल सोसाइटीभारत ने पुनर्जागरण में थियोसोफिकल - सोसाइटी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संस्था की स्थापना सन्1875 ई0 में न्यूयार्क में रूसी महिला एच0पी0 ब्लेवातस्की और एक अमेरिकन एच0 एम0 आल्काट ने की थी। अलीगढ़ आन्दोलनसर सैय्यद अहमद - खाँ का जन्म सन्1817 ई0 दिल्ली के एक कुलीन परिवार में हुआ। उसके पिता मीर मुतकी की ने उनकी शिक्षा के लिए विद्वानों को नियुक्त किया। आरम्भ से ही सैय्यद अहमद खाँ धार्मिक सिद्धान्तों और तत्कालीन समस्याओं पर विचार करते थे। बीस वर्ष की आयु में उन्होंने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नौकरी कर ली। मुस्लिमों में शिक्षा के प्रसार का कार्य सैय्यद अहमद ने सन् 1864 ई0 गाजीपुर मंे एक अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की।

जय प्रकाश नारायण की सामाजिक आन्दोलन में भूमिका

जय प्रकाश स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख समाजवादी, नेता थे और राजनीति से अवकाश लेने के बाद वे बिहार में भूदान तथा सर्वोदयी आन्दोलनों में लगे हुए थे। अहिंस सामाजिक क्रान्ति लाने या भूमि सुधार तक कर पाने में अपने आन्दोलनों के निराशपूर्ण परिणामों एवं सन् 1972 में एहसास के साथ कि वे आन्दोलन अब अपनी मृत्यु की कगार पर पहुँच चुके हैं, उन्होंने एक राष्ट्रीय गठबंधन सरकार के गठन के लिए की अनुरोध किया। उन्होंने हिन्दीअंग्रेजी विवाद हस्तक्षेप किया और विपक्ष के - आक्रमण का दृढ़ता से सामना करने के इन्दिरा गाँधी की प्रशंसा की । सन्1969 में उन्होंने केन्द्र सरकार को बिहार में विपक्षी नेतृत्व वाली सरकार को भंग करने की राष्ट्रपति शासन लगाने का सुझाव दिया। नर्मदा बचाओ आन्दोलन- नर्मदा नदी को भारत में गंगा के समान ही पवित्र तथा धार्मिक महत्व वाला स्थान प्राप्त है और इस नदी पर नर्मदा घाटी विकास के लिए लगभग 5 दशक पहले नदी के पानी का उपयोग करके सिंचाई और बिजली पैदा करने का लक्ष्य रखा गया था अतः मई सन् 1998 में इस के लिए एक तद्रथ तथा फिर सन् 1955 में एक अन्य समिति ने नर्मदा घाटी के विकास हेतु एक मास्टर प्लान बनाये जाने की सिफारिश की और कुछ विवादों का हल कर दिये जाने के बाद पर्यावरण से मंजूरी मिल गयी थी यह योजना भी जब से अस्तित्व में आयी तब से विवादास्पद ही बनी रही इसमें विवाद का मुख्य विषय हे कि इससे लाभ अधिक होगा कि हानि ? निष्कर्षसामाजिक - आन्दोलन समाज में फैली बुराईयों को दूर करने में अपना योगदान देते हैं। सामाजिक आन्दोलन नये विचारों को बनाने का प्रयास करते हैं। सामाजिक आन्दोलन स्पष्ट रूप से एक व्यक्तिगत किया नही है बल्कि सामूहिक क्रिया है भारतीय विचारकों को समाज में फैली कुरीतियों को देखा और उन्हें समाज से दूर करने के लिए समयसमय पर - आन्दोलन किये। जिनका समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

सन्दर्भ सूची

1. गोस्वामी रघुनन्दन-"भारत के ऐतिहासिक आन्दोलन" शिव कुमार शर्मा, रितु पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2012, पृ0 85

2. शंकर गिरिजा-"भारत में लोकतान्त्रिक समाजवादी आन्दोलन विश्व भारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2004, पृ0 52

3. सरकार, सुमितबंगाल में लक्ष्मी :स्वदेशी आन्दोलन- पब्लिकेशन, आगरा, 2010, पृ0 72

4. ताराचन्दभारत में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास-, ओरियट ब्लैक स्वाॅन, नई दिल्ली, 2009, पृ0 72

5. मजूमदार, आर0 सी0 "भारतीय लोगों का इतिहास और संस्कृति", राधिका पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008, पृ0 48

6. ग्रोवर बी0एल0 एवं मेहता अलकाआधुनिक भारत का - इतिहास, एस0 चन्द्र एण्ड कम्पनी लि0 नई दिल्ली, 2012, पृ0 15